षाण्मासिकी

ISSN 2277-5854

T.R.N.UPMUL 00599

श्रीविद्यामन्त्रमहायोग

आगमतन्त्र की शोधपत्रिका

श्रीविद्या साधना पीठ

वाराणसी -उ.प्र.

अङ्क - १

वर्ष - ७

UPNUL/2013/51445 अभिनिर्देशित ISSN 2277-5854

श्रीविद्यामन्त्रमहायोग

(आगमतन्त्र की शोधपत्रिका)

(षाण्मासिकी)

संस्थापक सम्पादक
श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ जी
(सीताराम कविराज)

सम्पादक मण्डल
प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी
सम्मानित आचार्य, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. श्रीकिशोर मिश्र
संस्कृत विभाग, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

श्रीविद्यासाधनापीठ
वाराणसी (उ.प्र.)

विषय–सूची

	सम्पादकीय	डॉ. राजेन्द्रप्रसादशर्मा	
शोधलेख			
1.	राजस्थानीय त्रिपुरसुन्दरी–स्तोत्रसाहित्य	प्रो. नीरज शर्मा	1–24
2.	श्री हरिहरानन्द सरस्वती करपात्र स्वामी द्वारा निरूपित त्रिपुरसुन्दरी शक्ति का स्वरूप	डॉ. गीतांजली शुक्ला	25–33
3.	वैदिक वाङ्मय में महिमामय मन और उसकी शक्तियों का संवर्धन	डॉ. राजकुमारी त्रिखा	34–40
4.	गीता की टीका एवं भाष्य परम्परा	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	41–44
5.	मानव शरीर में ब्रह्माण्ड शक्ति कुण्डलिनी का जागरण	आचार्य नटवरलाल जोशी	45–48
6.	शिवशक्तिरूपा श्रीविद्या	डॉ. आशीष कुमार जोशी	49–52
7.	कुण्डलिनी की सामान्य साधना एवं विविध उपाय	रामकिशोर पारीक	53–60

राजस्थानीय त्रिपुरसुन्दरी–स्तोत्रसाहित्य

प्रो. नीरज शर्मा

भारतीय चिन्तन की यह आस्था रही है कि दृश्यमान इस भौतिक जगत् का संचालन निश्चित नियम के अन्तर्गत बिना किसी नियन्ता के सम्भव नहीं। उस सर्वव्यापी और अनन्तशक्तिसम्पन्न परमतत्त्व को अनेक अभिधानों से अभिहित किया गया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, महाकाली, महाशक्ति, महा सरस्वती और इनके भिन्न–भिन्न अवतार उसी परम शक्ति परमब्रह्मा का लीला प्रपंच है। संस्कारों की विभिन्नता के कारण मनुष्य का चिन्तन विभिन्न प्रकार का रहा है। इसी स्वभावगत विविधता के कारण उसकी विविध श्रद्धा उस आद्यशक्ति के विभिन्न रूपों के साथ सम्बद्ध है। उस श्रद्धा की वाचिक अभिव्यक्ति का नाम ही स्तुति है। भक्त अपने उपास्य की सर्वोच्चता, सर्वोत्कृष्टता, चारित्रिक विशिष्टता और लीलाओं का कवित्वपूर्ण भाषा में वर्णन कर भक्त कवियों ने आद्यशक्ति का विविध रूपों में गुणानुवाद, कीर्तन, स्मरण एवं अपनी रक्षा के लिए शरणागत होकर विनम्र निवेदन किया है। इस शरणागतिपूर्ण आत्मनिवेदन में उनकी इष्टदेवता के प्रति आत्मार्पण की भावना एवं ऐकान्तिकी भक्ति सन्निहित है। स्तोत्र वाङ्मयी आराधना अथवा पूजा का साहित्यिक स्वरूप है। स्तोत्र साहित्य में भक्तकवि अथवा आराधक के सभी भावों का समाश्रय अन्ततः भक्ति में होता है जहाँ वे भक्तिरस में अवगाहन कर आराध्य को साकार रूप में समक्ष जानकर उनकी लीला, नखशिखवर्णन, उनके अद्भुत एवं अलौकिक स्वरूप तथा दिव्य अवदान को अपनी शब्दमयी आराधना का विषय बनाते है।

परब्रह्म का वास्तविक स्वरूप तो निर्गुण, निराकार एवं अव्यक्त है। सृष्टि रचना, रक्षण तथा संहारादि समस्त कार्य परब्रह्म शक्ति के माध्यम से ही करते हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती भुक्ति मुक्तिप्रदात्री, महामाया, परब्रह्मस्वरूपिणी है। भद्रा, कालिका, वैष्णवी, ब्राह्मी, भुवनेश्वरी, रक्तशाम्भवी, शिवा, गौरी आदि सभी रूपों की स्तुतियाँ प्राप्त होती हैं, किन्तु प्रत्येक रूप से सभी रूपों को सम्बद्ध किया गया है। देवी को त्रिपुरसुन्दरी, नारायणी, भ्रमराम्बा, तारा, भवानी, विन्ध्येश्वरी, विन्ध्यवासिनी, ललिता, गौरी, मातङ्गी, भुवनेश्वरी, इन्द्राक्षी, कालिका आदि नामों से विभूषित किया गया है। क्षेमंकरी, कामेश्वरी, महाभैरवी, रक्तम्बरा, जगत्सृष्टिसंरक्षणसंहारकर्त्री, महाशक्तिरूपा तथा महानन्दरूपा है। राजस्थान प्रदेश में भगवती आद्या शक्ति त्रिपुरसुन्दरी की आराधना में सैकडों स्तोत्र लिखे गये हैं जिनमें कतिपय बीसवीं शती में प्रणीत प्रमुख स्तोत्र निम्नलिखित हैं–

1. श्रीविद्याताण्डवाष्टक–

इस स्तोत्र के रचयिता जयपुर निवासी पं. हरिकृष्ण दौर्गादत्ति हैं। यह अष्टक *संस्कृत रत्नाकर* के प्राचीन अंक में प्रकाशित हुआ है तथा इसमें भगवती त्रिपुरसुन्दरी का स्तवन है। त्रिनेत्रवाली, श्री शिवप्रिया, त्रिवर्णवर्णित, मोक्षसहित त्रिवर्ग दायिनी, तीनों भुवनों के शोकसंताप का हरण करने वाली, तीनों वेदों में जिसके वैभव का गान किया गया है ऐसी त्रिलोकसुन्दरी, श्रीविद्यास्वरूपिणी भगवती की हम वन्दना करते हैं। इस प्रकार भावभरा एक पद्य दर्शनीय है–

त्रिलोचनां त्रिलोचनप्रियां त्रिवर्णवर्णितां
चतुर्थवर्गसगंतं त्रिवर्गदानदायिनीम् ।
त्रिलोकशोकमोचनीं त्रिवेदगीतवैभवां
त्रितापतापहारिणीं त्रिलोकसुन्दरीं भजे ॥[1]

2. उमा स्तुति

इस स्तोत्र के प्रणेता जयपुर के पं. जगदीश शर्मा खाण्डल है। यह रचना *संस्कृत रत्नाकर* में प्रकाशित है।[2] इसके प्रत्येक पद्य में चतुर्थ चरण के रूप में 'मां पाहि सत्वरमुमे! पतितं भवाब्धौ' (हे उमे! भवसागर में पतित मेरी शीघ्र रक्षा करो) पंक्ति निबद्ध है। यह स्तोत्र संकटग्रस्त भक्त–पुत्र वह रक्षार्थ प्रार्थना है जिसमें वह कातर होकर एकमात्र आश्रयभूता माता से अनुकम्पा की याचना करता है। मातृ रसिकों के आनन्द के लिये कतिपय पद्य अत्यन्त दर्शनीय है—

माता त्वमेव जगतां च पिता त्वमेव
भ्राता त्वमेव च तथासि सखा त्वमेव।
विद्या त्वमेव सकलं च बलं त्वमेव
मां पाहि सत्वरमुमे! पतितं भवाब्धौ॥
त्वामन्तरा जननि! मे नहि कोऽपि गोप्ता
सजीभवावितुमतस्त्वरितं शिवे! माम्।
मात्रा यतः कुतनयोऽप्यनुपेक्षणीयो
मां पाहि सत्वरमुमे! पतितं भवाब्धौ॥
एवं ह्यनन्यशरणस्तव बालकोऽयं
नानाविधाभिरपि नास्ति परीक्ष्य आर्ये।
श्रुत्वेदमेव विनयस्य वचो दयालो!
मां पाहि सत्वरमुमे! पतितं भवाब्धौ ॥

3. दुर्गापुष्पाञ्जलि

दुर्गापुष्पाञ्जलि स्तोत्र काव्य के रचयिता महामहोपाध्याय श्री दुर्गाप्रसाद द्विवेदी है। यह स्तोत्र ग्रन्थरूप में प्रकाशित है। इसका प्रकाशन राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मंदिर जयपुर से हुआ है तथा पं. गंगाधर द्विवेदी इसके सम्पादक–व्याख्याता है। इन्होंने इस पर परिमल नामक विवृत्ति का लेखन किया है।[1]

दुर्गापुष्पाञ्जलि में दो विश्राम है तथा इनमें जगदम्बा के अनेक स्तोत्र का संकलन है जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

प्रथम विश्राम

(1) **परमार्थाकलन**—इस स्तोत्र में दार्शनिक दृष्टि से जीव ब्रह्म का वास्तविक अभेद बतलाते हुए एकमात्र ईश्वर की सत्ता, व्यापकता और उसके सच्चिदानन्द स्वरूप का परिचय कराया गया है। उसी के द्वारा दृश्य जगत् की सृष्टि, स्थिति और संहार रूप की क्रियाओं का परिणामन दिखलाया है। शक्ति और शक्तिमान् की अभिन्नता एवं ब्रह्मा–विष्णु–रूद्र आदि भेदक नामों की कल्पना और ईश्वर के नामरूप की विभिन्नता के होते हुए भी वास्तव में उनकी एकता की स्थिति का प्रतिपादन किया गया है। और इस प्रकार दर्शनों द्वारा विभिन्न भूमिका में आत्मपरीक्षण किये जाने एवं प्रस्थान–भेद के होने पर भी मौलिक रूप में उनकी एकवाक्यता का निरूपण किया गया है। कतिपय पद्य दर्शनीय है—

उपास्महे सिद्धिसमृद्धिसद्मप्रमाहेश्वरं ज्योतिरनन्तशक्ति ।
यस्मात् परस्मादिव शासनस्य विश्वस्य जन्मस्थितिभङ्गमाहु॥
यो गीयते ब्रह्मपदेन सूत्रे वेदागमेऽपीश्वरशब्दितेन।
तमेकदेवं परमार्थतत्त्वमात्मानमात्मन्यवधारयामि॥
प्रथाकथाकारकलामुपेतो, ब्रह्मा च विष्णुश्च ततश्च रूद्रः।
यानाश्रयन्ते समवायिनीव, सरस्वती श्रीरमलापि गौरी॥4

(2) **जगदम्बा–जयवाद**—इसमें शब्द और अर्थ की सृष्टि का प्रकार, उसकी व्यापकता और उसके द्वारा प्रधान रूप से स्थूल जगत् का परिणाम बतलाया गया है। वेदान्तियों की परिभाषा में इसी को नाम और रूप की संज्ञा दी गई। शास्त्रों में वर्णित परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी इन चारों पारिभाषिक नामों के द्वारा शब्द–ब्रह्म की विभूति के रूप में भगवती के ही विविध रूपों का चित्रण होना दिखलाया है। शक्ति और शक्तिमान् का अभेद होने से शब्द और अर्थ की अभिन्नता और उसकी व्यापकता का संतुलन करते हुए भगवती के शंकर की अर्धांगिनी कहलाने की यथार्थता और उपयोगिता का निदर्शन किया है और सभी प्रकार के सुख– सौभाग्य की प्रतिष्ठा का प्रधान केन्द्रबिन्दु बतलाया है। आगमोक्त शक्ति–पीठों में प्रधान माने जाने

वाले जालन्धरपीठ की अधिष्ठात्री बज्रेशी के स्थूल और सूक्ष्म दोनों तरह के सम्मिलित रूपों का इसमें वर्णन प्रस्तुत किया है। कतिपय पद्य दर्शनीय है—

जय जगदम्ब! कदम्बविहारिणी! मङ्गलकारिणि! कामकले!
जय तनुशोभाकल्पितशम्पे! लसदनुकम्पे कान्तिनिधे!
जय जितकामेऽपि जनितकामे! धूर्जटिवामे वामगते!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि भक्तिवशे॥
मूले दीपककलिकाकारे! विद्यासारे! भवसि परा!
तस्मादपसृतिकलनावृद्धे! मणिपुरमध्ये पश्यन्ती।
स्वान्ते मध्यमभावाकूता कण्ठे वितता वैखरिका
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि भक्तिवशे॥
क्लेशं भञ्ज्य रञ्ज्य चित्तं, वित्तं स्फारीकुरु वरदे!
नास्ति कृपानिधिरम्ब! त्वत्तो मत्तो मत्ततमो न शिवे!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि भक्तिवशे॥[5]

(3) **ईहाष्टक**—इसमें कांगडा की सुप्रसिद्ध ज्वालादेवी के ऐतिहासिक मन्दिर और वहाँ के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया गया है। इनके सम्बन्ध में प्रचलित पौराणिक आख्यान, ज्वाला नाम की प्रसिद्धि और उसकी सार्थकता एवं उनकी लोकोत्तर महिमा और प्रभाव का चित्रण है। साथ ही भक्तजनोचित हृदय से और किसी बात की आकांक्षा न करते हुए एकमात्र उनके प्रति अटूट श्रद्धा और अपनी भक्ति की स्थिरता के लिए कामना की गई है। भक्त की निष्ठा का अचल रहना ही उसका प्रमुख लक्ष्य होता है, क्योंकि वास्तव में यही उसकी सर्वोपरि सफलता मानी जाती है। इसीलिए इस स्तोत्र के ईहाष्टक नाम की सार्थकता है। कतिपय पद्य द्रष्टव्य है—

ज्येष्ठा क्वचित् क्वचिदुदारकलाकनिष्ठा,
मध्या क्वचित् क्वचिदनुद्भवभावभव्या।
एकाप्यनेकविधया, परिभाव्यमाना
ज्वालामुखी सुमुखभावमुरीकरोतु॥
आस्तां मतिर्मम सदा तव पादमूले
तां चालयेन्न चपलं मन एतदम्ब!।
याचे, पुनः पुनरिदं प्रणिपत्यमात-
र्ज्वालामुखि! प्रणतवाञ्छितसिद्धिदे! त्वाम् ॥6

(4) **देवकालीमहिमा**—देवकाली महाकाली का ही दूसरा नाम है। प्रस्तुत महिमा में महाकाली की ही प्रशस्त महिमा का वर्णन और उनकी उपासना द्वारा प्राप्त होने वाले आगमोक्त विशेष फलों का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त, स्तुति की समाप्ति में सत्त्व, रज और तम तीनों के गुण—धर्मानुसार, त्रिशक्ति के रूप में उनके अवतार का निरूपण एवं तीनों ही रूपों का आगम-सम्मत स्वरूप दिखलाया गया है। इस स्तुति की यही विशेषता है। इसके कुछ पद्य प्रस्तुत है—

ते देवकालि! कलिकर्म विनाशयन्ति
वन्दारू-संहतिषु शर्म विकासयन्ति।
ज्ञानामृतानि हृदये परिवाहयन्ति
ये तावकीनपदपङ्कजमर्चयन्ति॥
ते देवकालि! कुकृतानि निकृन्तयन्ति,
संसारदुःखनिगडानि विभञ्जयन्ति।
शान्तिं परामधिमनः परिचारयन्ति
ये त्वत्कथामृतरसान् सततं धयन्ति॥[7]

(5) **चण्डिका-स्तुति**—यह भगवती चण्डीदेवी के आश्रम का प्राकृतिक वर्णन और उनके चण्डी स्वरूप का प्रतिपादन है। उक्त स्थान गोमती के तटपर स्थित है। इस स्तोत्र में चण्डी की असाधारण महिमा का गान किया है। जो अपने समीपस्थसरोवर की शोभा को सहस्रदल कमलों के विकास के द्वारा प्रफुल्लित करके मानो अपने कृपामृत की प्रचुरता का ध्यान दिलाती है, प्रतिक्षण हर्षप्रद घटनाओं के सृजन करने के कारण अत्यन्त स्निग्ध स्वभाव वाली भयापहा माता चण्डिका की शरण लेता हूँ—

अनुग्रहरसच्छटामिव सरःश्रियं यान्तिके
विकासयति, पद्मिनीदलसहस्रं सन्दानिताम् ।
प्रतिक्षण समुन्मिषत्प्रमदमेदुरां तामहं
भजामि भयखण्डिकां सपदि चण्डिकाम्बिकाम् ॥[8]

(6) **महिषमर्दिनीगीति**—इसमें भगवती महिषमर्दिनी (महिषासुर नामक राक्षस का वध करने वाली कौशिकी) के प्रादुर्भाव से लेकर उनके महालक्ष्मीस्वरूप की परिणति तक आगमोक्त समष्टि रूप का वर्णन किया गया है। सुप्रसिद्ध मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत *सप्तशती* (दुर्गापाठ) में वर्णित प्रथम, मध्यम और उत्तमम तीनों चरित्रों की अधिष्ठात्री महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के स्वतंत्र रूपों का भी क्रमशः निदर्शन है। नवार्णमंत्र के तीनों बीजों का महत्त्व और उनके प्रतिपाद्य अर्थों का परिचय कराया गया है। सङ्गीतकला के प्रेमियों के लिए गान के रूप में उक्त गीति और अधिक महत्त्व रखती है। इसके कुछ पद्य द्रष्टव्य है—

इच्छामात्र सुपर्वविनिःसृत
तेजः पुञ्जरचितललिताङ्गि !।
निर्गुणतो गुणभावमुपेयुषि!
जय जय विकसद्दीर्घापाङ्गि !।
ब्रह्मविष्णुशिवसृष्टिविधायिनि!
जय जय लोकालोकमहेशि!।
भक्तशोकशङ्कु उद्धृतिनिपुणे!
शरणागतसौहित्यविधात्रि॥[9]

(7) **सकलजननीस्तव**—यह भगवती त्रिपुरसुन्दरी (श्रीविद्या)के प्राकृतिक किन्तु साकार-स्वरूप का वर्णन है। इसीके साथ-साथ उनकी पूर्णविकसित अवस्था और महिमा का चित्रण किया गया है। आगम ग्रन्थों में इनको शक्ति-मण्डल की प्रधान नायिका और महाराज्ञी कहा गया है। इसीलिए इनको सकलजननी कहा जाता है। स्तोत्र-साहित्य के प्राचीन प्रमुख-स्तोत्र *पञ्चस्तवी* में भी इनकी स्तुति सकलजननी के नाम से की गई है। इसका एक पद्य प्रस्तुत है—

जननमरणजन्मत्रासघोरान्धकार-
प्रशमनकरणायाह्याया काचित्प्रदीप्तिः।
तरूणतरणिरागं म्लानिमानं नयन्ती
विहरतु मम चित्ते चन्द्रखण्डावतंसा॥[10]

(8) **सौम्याष्टक**—इसमें त्रिपुर-सुन्दरी के विविध माङ्गलिक रूपों का निरूपण किया गया हैं। शरणागत के उद्धार में भगवंती की कर्तव्यपरायणता का स्मरण कराते हुए भक्त द्वारा मनोवांछित लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के सुखों की पूर्ति की प्रार्थना तथा इस भाव के अनुरूप उनके सौम्य-स्वरूप का चिन्तन करना बतलाया है। इसके दो पद्य प्रस्तुत है—

महेश्वर परिग्रहे! स्तुतिपरायणानुग्रहे!
महास्फुरणनिग्रहे! निरययातना निग्रहे!।
प्रसीद सुखसंग्रहे! प्रणतदुःखभङ्गग्रहे!
विनाशितमहाग्रहे विमलभक्तियोगग्रहे॥
महाभयनिवारिणी सकलशोकसंहारिणी!
भवाम्बुनिधितारिणी, दुरितजातविद्राविणी।
अहंमति विदारिणी पतितमण्डलोद्धारिणी
ममान्तरविहारिणी, भवतु सौम्यसञ्चारिणी॥[11]

(9) **अम्बावन्दना**—इसमें 'श्रीयन्त्र' के आगमोक्त स्वरूप का प्रतिपादन है। मूलाधार-स्वाधिष्ठान आदि षट्चक्रों के द्वारा अन्तर्याग की भावना का प्रकार एवं श्रीचक्र के अन्तर्गत आवरण देवताओं के साथ श्रीविद्या के दिव्य सौन्दर्य की सृष्टि, चिन्तामणि नामक दिव्य-आगार में उनके निवास, देवताओं द्वारा उनकी सामूहिक वन्दना तथा ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को प्रसन्न होकर महर्षि पद देने का उल्लेख किया गया है। एक पद्य प्रस्तुत है—

ऐन्द्रीं भूतिं भक्तजनेभ्यो वितरन्तीं,
ह्रींकुर्वाणां तद्विमुखेसु प्रतिवेलम् ।
श्रीँ निर्दोलां तद्भवनान्ते विदधानां
वन्देऽमन्दद्योतकदम्बां जगदम्बाम् ॥[12]

(10)**आदेशाश्वघाटी**—यह प्रधान रूप से भगवती दक्षिणा-कालिका की स्तुति है। इसमें उनके निरङ्कुश ऐश्वर्य और उच्चतम प्रभुशक्ति का प्रतिपादन किया गया है। उपासना क्षेत्र में इनकी अपनी विशेषताओं का निर्देश करते हुए विविध विद्याओं और कलाओं का इन्हें प्रधान आवास माना है। भक्त द्वारा किये गये दण्डनीय अपराधों का भी अपने सहज-सुलभ वात्सल्य भाव से मन्दस्मित रहते हुए क्षमादान कर देने का इनका लोकोत्तर साहस दिखलाया है। संस्कृत के अश्वघाटी छन्द में यह स्तुति प्रस्तुत किये जाने और साथ ही आदेश ले जाने वाले अश्वों की दौड़, का अर्थ लेकर इस स्तव का यह नामकरण किया गया है। एक पद्य प्रस्तुत है—

वामां गते, प्रकृतिरामां स्मिते, चटुलदामाञ्चलां कुचतटे
श्यामां वयस्यमितभामां वपुष्युदितकामां मृगाङ्कमुकुटे।
मीमांसिका, दुरितसीमान्तिका बहलभीमां भयापहरणे
नामाङ्कितां, द्रुतमुमां मातरं, जपनिकामांहसां निहतये॥[13]

(11) **स्वार्थाशंसनम्**—इसमें अर्धनारीश्वर एवं गुरूरूप में भगवती के साकार भाव का प्रतिपादन करते हुए उनके उपासनात्मक स्वरूप का विवेचन है। इसके साथ-साथ शास्त्र के विधि-विधान के अनुसार कष्ट-साध्य उपासना-मार्ग, का भार ले चल सकने में अपनी स्वाभाविक असमर्थता, फलतः इसके विकल्प में केवल आगमोक्त नामपारायण के सहारे अभीष्टलाभ मिल सकने की निश्चिन्तता और एतदर्थ अपेक्षित तन्मयता को अक्षुण्ण रखने की कामना की है। इस तन्मयतारूप स्वार्थ पूर्ति की कामना ही इस स्तोत्र का प्रधान लक्ष्य है, अतएव इसे 'स्वार्थाशंसन' का नाम दिया गया है। इसका एक पद्य प्रस्तुत है—

लसद्भूरिसिन्दूरपूरप्रकाशं
किमप्युद्यदुद्दाममोदप्रवाहम् ।
अकम्पानुकम्पापरीतं प्रसन्नं
भवत्या स्वरूपं ममान्तश्चकास्तु॥[14]

(12) **अन्तर्विमर्श**—इसमें मुख्यतः कुण्डलिनी शक्ति के आरोह और अवरोह के क्रम का प्रतिपादन तथा योगदर्शन में वर्णित संप्रज्ञात और असंप्रज्ञात समाधियों द्वारा उसके साक्षात्कार का दिग्दर्शन कराया है। इसके अतिरिक्त साकार और निराकार दोनों अवस्थाओं में उपासना की दृष्टि से भावना की प्रधानता, व्यापकता और उसके द्वारा विविध शक्ति के रूपों को परिणमन दिखलाया गया है। समूचा स्तोत्र कुण्डलिनी के ही चमत्कारपूर्ण विलासों का निदर्शन है। तंत्रशास्त्र की परिभाषा में इसको अन्तर्याग की संज्ञा दी गई है। यहाँ इसी अन्तर्याग के वर्णन के कारण इसका नाम अन्तर्विमर्श रखा गया है। इसके दो पद्य प्रस्तुत है—

मूले दीपाङ्कुराकारमग्रे पक्षानुकारिणीम्।
किरन्तीममृतज्योत्स्नां कलये बोधसारिणीम्।
श्यामामपि परिस्फूर्जत्तडित्कान्तकलेवराम्।
वन्दे त्रिविग्रहां नानाविग्रहामप्यविग्रहाम्॥[15]

(13) **आर्याम्बर्चना**—इसमें भगवती के निराकार रूप की प्रधानता बतलाते हुए सर्वसाधारण की दृष्टि से उनके साकार रूप की कल्पना तथा पञ्चायतन के रूप में उपासना प्रणाली की प्रमुखता का निर्देश किया है। साथ ही इस उपासना के द्वारा लौकिक सुखों के उपभोग तथा स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) तीनों की सुगम उपलब्धि का निरूपण है। शक्ति-पञ्चायतन के पूजा प्रकार में स्थूल और सूक्ष्म दोनों उपासना क्रमों का समन्वय और उनका एकत्र अन्तर्भाव होना भी बतलाया गया है। इसके दो पद्य प्रस्तुत है—

शोधय मानससरणिं बोधय विज्ञानकोरकाण्यभितः।
साधय सकलमनोरथपारक करूणानिधे! मातः॥
बन्धूक बन्धुराङ्गी विलसत्कारुण्यसुन्दरापाङ्गी।
भास्वद्भूषणभङ्गी मानस सङ्गीकृते भूयात्॥[16]

(14) **अवस्थानिवेदन**—इसमें भक्त की कठिनाइयों और उसकी करुणदशा का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। एक ओर सामाजिक जीवन में होने वाले विपरीत और कटु अनुभव दूसरी ओर मानव सुलभ दुर्बलताओं का अनेक रूप से चित्रण करते हुए भक्त की विवशता एवं दयनीय दशा का हृदयस्पर्शी विश्लेषण उपस्थित किया गया है। प्रलोभनों में फंसकर मनुष्य किस प्रकार अपना विवेक खो बैठता है, स्वार्थ के वशीभूत होकर सत्य और असत्य की परवाह न करके किस प्रकार अपने कर्तव्यमार्ग से च्युत हो जाता है; परिणाम में उसे कैसी निराशाओं का सामना करना पड़ता है और अन्त में अपने किये पर कितना अनुताप होता है, आदि व्यवहार क्षेत्र के संबंध में मार्मिक उद्बोधन है। इसकी रचना संस्कृत के शिखरिणी छन्द में होने से करुण और वात्सल्य रस का संपुटित भक्ति परिपाक अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है। इसमें वर्णित अनुभूतियाँ हृदय को द्रवित करने वाली हैं। अतः यह अवस्था निवेदन मानसिक वेदनाओं की प्रधानता के कारण स्वयंवेद्य है। इसके दो पद्य देखिये—

दिवा तत्तत्कार्यव्यतिकरपरीतेन मनसा,
निशायामप्यारान्मुहुरुपचितस्वप्रमहसा।
पराक्रान्तो दूये जननि! जगतामकेशरणे!
कथं वीक्षोपेक्षासरणिमनुसर्तुं प्रभवसि॥
न सक्तिस्त्वत्पूजाविधिषु न च भक्तिस्तवपदे,
क्व वा शक्तिर्ध्याने भवतु तरलानामविषये।
इति क्लेशाक्लिष्टे मयि यदि न ते मातरधुना
दयायोगो योगो भवति जनुषो निष्फल इह॥[17]

(15) **आत्मसमर्पण**—इसमें कवि ने जीवन में घटित होने वाले प्रमादों और मनुष्य सुलभ विवशताओं का लेखा-जोखा उपस्थित करते हुए भगवती की सहजसुलभ करुणा के प्रति हृदय का स्वाभाविक आकर्षण, उसकी छत्रछाया में सुरक्षा की स्थिरता, और उसके अकृत्रिम वात्सल्य का गुणानुवाद करते हुए, अपनी कमियों की ओर संकेत किया है और अनन्यगतिक होकर माता के चरणों में आत्मसमर्पण कर दिया है। साथ ही यह अभिलाषा व्यक्त की है, कि उसका यह मोह बन्धन कभी टूटने न पावे। इसके दो पद्य प्रस्तुत है—

संसारदावानलदीनभक्तप्रसादनैकामृतपूरपूर्तिः।
उपासकप्रीणप्रबद्धकक्षे! दुर्गाप्रसादस्य गतिस्त्वमेका॥
क्लिश्यत्कवित्वव्रततीवितानप्रकाशनानभ्रनभस्य वृष्टिः॥
समुच्छलद्भक्तिविशेषतुष्टे! दुर्गाप्रसादस्य गतिस्त्वमेका॥[18]

द्वितीय-विश्राम

(1) **दुर्गाप्रसादाष्टकम्**—इसमें भावना-प्रधान उपासना का मार्गदर्शन करते हुए आगमोक्त कालीकुल और श्रीकुल के अन्तर्गत परिगणित होने वाली विभिन्न शक्तियों के आविर्भाव और उनकी शास्त्र-सम्मत मौलिक एकता का निर्देश है। इस प्रसंग से तन्त्र-शास्त्र में वर्णित मेधा-साम्राज्यदीक्षा आदि कुछ प्रमुख दीक्षाओं का संकेत-रूप में निदर्शन और मूलशक्ति के साथ उनका अभेद बतलाया गया है। पराशक्ति की प्रधानता और उसके द्वारा स्थूल और सूक्ष्म दोनों उपासनाओं का उद्गम और उनके पारमार्थिक रूप का भी परिचय है।[19] कतिपय पद्य देखिये—

वन्दे निर्बाधकरुणामरूणां शरणावनीम्।
कामपूर्णजकाराद्यश्रीपीठान्तर्निवासिनीम्॥
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादौ प्रतिव्यक्तिविलक्षणाम्।
सेवे सैरिभसंमर्दरक्षणेषु कृतक्षणाम्॥

स्तवीमि परमेशानी महेश्वरकुटुम्बिनीम् ।
सुदक्षिणामन्नपूर्णां लम्बोदरपयस्विनीम् ॥20

(2) **नवदुर्गास्तव**—दुर्गा-सप्तशती के देवीकवच में निर्दिष्ट नवरात्र की पूजा में प्रधानता रखने वाली शैलपुत्री आदि नवदुर्गाओं की यह स्वतन्त्र स्तुति है। उनके सम्बन्ध में प्रचलित पौराणिक आख्यानों का सार और आगमोक्त विशेषताओं का समन्वय करते हुए वर्णन है तथा महाकाली आदि दुर्गापाठ में वर्णित त्रिशक्तियों का इनसे सम्बन्ध और अन्त में इन सबका दुर्गा के रूप में अन्तर्भाव होना बतलाया है। इस स्तोत्र के कुछ पद्य देखिये—

कार्येण याऽनेकविधां श्रयन्ती
निवारयन्ती स्मरतां विपत्तिः।
अपूर्वकारुण्यरसार्द्रचित्ता:
सा शैलपुत्री भवतु प्रसन्ना:॥
पादौ धरित्री कटिरन्तरिक्षं
यस्याः शिरो द्यौरुदितागमेषु।
अन्यद्यथायोगमयोगदूरा
सा चन्द्रघण्टा घटयत्वभीष्टम् ॥21

4. ललितासहस्रं काव्यम्

इस स्तोत्रकाव्य के रचयिता दुर्गाप्रसाद द्विवेदी से दीक्षित जयपुर वास्तव्य तन्त्रागमनिष्णात आशुकवि पं. हरिशास्त्री दाधीच है। यह स्तोत्र राजस्थानीय स्तोत्र वाङ्मय में महनीय स्थान रखता है। इस स्तोत्र में *ब्रह्माण्डपुराण* के ललितोपाख्यान में हयग्रीव-अगस्त्य संवाद में वर्णित भगवती ललिता के सहस्रनामों पर आधारित, एक-एक नाम पर मंत्रगर्भित अनुपम काव्यसौष्ठसम्पन्न एक-एक श्लोक है। इन श्लोकों में तन्त्रोक्त श्रीविद्या उसकी अधिष्ठत्री स्वरूपिणी श्रीचक्राधिवासिनी त्रिपुरसुन्दरी महाराज्ञी ललिता देवी के महिमामय कार्यों तथा स्वरूपों को प्रकाशित किया गया है। कामेश्वरी भगवती की तन्त्रागम के अनुसार बारह कलाओं की सुन्दर व्याख्या की गई है। कुछ पद्य द्रष्टव्य है—

यस्यां माति समस्तविश्वमथवा याऽऽस्ते परिच्छेदिनी
सर्वेषां जगतां, प्रमाणयति यां लोकोऽस्य निष्पत्तये।
योऽमायां निशि तां हि खण्डपरशोर्जायां जनोऽर्चत्यसौ
'माया' मुत्तरति क्षणेन सकलां नायाति भूयो भवम् ॥
आकाङ्क्षे न हि भूमिपाल भवन द्वाराण्यहं लोकितुं
कौबेरीं श्रियमश्नताञ्च धनिनां नैवाननानीक्षितुम् ।

ईषज्ज्ञानमदाविलानपि जनाअेतुं स्पृहा नास्ति मे
कामानां 'प्रसवित्रि' देवि हृदये वासस्तवाऽस्तां सदा॥[22]

1962 ई. में श्री गोविन्द मिश्र भरतपुर ने इस 'श्री ग्रन्थमाला' के तृतीयपुष्प के रूप में प्रकाशित किया है।

5. कलिकात्रिशती–

इस स्तोत्र का प्रणयन पं. हरिशास्त्री दाधीच ने किया है। भगवती कालिका के स्तव साहित्य में 'त्रिशती' का अभाव था अतएव श्रीभक्तों के आग्रह पर शास्त्री जी ने अत्यन्त प्रसन्नता एवं उत्साह से इस 'स्तोत्र' की रचना की। इस स्तोत्र के भगवती के अपूर्व, अनुपम, तीनसौ सुन्दर नामों का अर्चन है। सच्चिदानन्द स्वरूपिणी, भक्तवत्सला, करुणामृतसागरा, विश्वम्भरा, महामाया कालिका का चरित्र व कार्य अतिभयंकर तथा माधुर्यपूर्ण, सौम्य-रौद्र, संहार एवं सृजन की विचित्र विविधताओं से युक्त है। इनके स्वरूप एवं महिमा का गान करने वाला यह 'त्रिशती' स्तोत्र शतपद्यात्मक है तथा श्री रामदयालु औषधालय अजमेर से श्री पुरुषोत्तमलाल शर्मा द्वारा प्रकाशित है। इस ग्रन्थ का नाम श्री 'कालीपञ्चरत्नम् ' है। ऋषि, छन्द, देवता, विनियोग, अंगन्यास तथा मानसोपचार के उपरान्त पठित इन तीन सौ नामों में से कुछ पद्य प्रस्तुत—

ॐ क्रीं कालिका केवला कालकला कैवल्यरूपिणी।
आद्याः शक्ति पराविद्या महामाया स्वभूर्विभुः॥
स्वान्तस्थकोटिब्रह्माण्डा हानोपादानबोधिका।
वेदोपनिषदुच्छवासा सर्वदेवोपसेविता॥
ब्रह्मविष्णुशिवेशाना पुराणस्मृतिशालिनी।
आगमोल्लासकारिणी मन्त्रतन्त्रप्रवर्तिनी॥
कार्मानुयोजिका कर्मफलदा कर्मसाक्षिणी।
कर्मक्षयकरी कर्मगुणयोगविभेदिनी॥[23]

6. श्रीकस्तूरीस्तवराज

इसके रचयिता पं. हरिशास्त्री दाधीच हैं तथा इस स्तोत्र में भी भगवती जगदम्बा के दिव्य स्वरूप का आराधन है। इसमें कुल 42 पद्य हैं तथा यह 'कालीपञ्चरत्नम्' में प्रकाशित है। तन्त्रागमोक्त रहस्यों का भी इसमें व्याख्यान किया गया है।

'कस्तूरी' शब्द के रहस्य को बताते हुये प्रारम्भिक श्लोक में ही कहा गया है कि कस्तूरी में द्वि, गुण, श्रुति, इषु अर्थात् द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्णो से रहित अर्थात् कस्तूरी पद से अ स् त् ऊ इन चार वर्णो से विरहित क्+री श्लिष्ट होकर 'क्री' बनता है—जो आगमोक्त शीतांशु लेख से कालिका द्वारा 'क्री' बीज के

रूप में प्रतिष्ठित होता है। इस 'क्रीं' बीज की सबुद्धि तथा 'स्वाहा' परक युक्ति करके 'क्रीं स्वाहा' एक, 'क्रीं क्रीं स्वाहा' दो इस तरह छ बार बीजमंत्र के रहस्य योग विधि अनुष्ठान से कालिका का जाप करने पर समस्त कार्य सिद्ध हो जाते हैं—

कस्तूरिद्विगुणश्रुतीपुरहिता शीतांशु लेखोज्वला,
यस्या बीजमनुर्जयत्यविरतं लोकाञ्छिवं लम्भयन् ।
प्राणान्योषणमापयञ्जनमनोमात्राः समुल्लासयन्
वन्देऽहं परमेश्वरीं भगवतीं तां दक्षिणां कालिकाम् ॥[24]

इसी प्रकार पञ्चाक्षरी, सप्तबीज, षडक्षरी, सप्ताक्षरी, अष्टाक्षरी, नवाक्षरी, आत्मबीज एवं द्वादशाक्षरी पर्यन्त बीजमन्त्रों एवं रहस्यों को उद्घाटित किया है। जाप का फल बताते हुये एक स्थान पर उद्धृत है—

मन्दो विज्ञति पङ्गुरिङ्गति जवात् रङ्को महीपालति,
शत्रुर्मित्रति हिंसकोऽनुचरति क्रूरोऽप्यलं सौम्यति।
क्षीणः पुष्टति निर्बलः प्रबलति त्रस्तोऽपि निर्भीकति,
कालि! त्वन्मनुजापकेन कृपया स्पृष्टोऽपि दृष्टोऽप्यहो॥[25]

7. देवीस्तोत्र

देवीस्तोत्र के प्रणेता जयपुर निवासी कविमल्ल हरिवल्लभभट्ट हैं। इस स्तोत्र में कवि ने अपनी कुलदेवी महाशक्ति स्वरूपिणी भगवती गौरी का 15 पद्यों में वन्दन किया है। इस स्तोत्र में प्रौढ़ पाण्डित्य एवं सुन्दर रचनाचातुरी का निदर्शन है। राजस्थान संस्कृत-अकादमी ने श्री हरिवल्लभ भट्ट की समस्त रचनाओं को प्रो. प्रभाकरशास्त्री के सम्पादकत्व में 'कविमल्लकाव्य कौमुदी' के नाम से प्रकाशित किया है। यह स्तोत्र भी उसमें संकलित है। कुछ पद्य प्रस्तुत है—

सततविनतिततिविनिरतशतधृति शितिगल शौरि।
भगवति तव पदपङ्कजे भवतु मुदे मम गौरि॥
शिथिलीकृतसमरावसरहरिणाधिपमुखदौरि।
महिषविपुलगलविदलिनी जय जय भगवति गौरि॥
वलयितनिखिलसखीसविधवादितमृदुकरतालि।
मधुरमधुरपदगायनी जय जय भगवति कालि॥[26]

8. श्रीमन्दाक्रान्ता स्तोत्र

इस स्तोत्र के लेखक सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य हैं। यह स्तोत्र अखण्ड ब्रह्माण्डमण्डल अधिष्ठात्री कुलकुण्डलिनीस्वरूपा, मूलविद्यास्वरूपिणी, महामहिमामयी जगदम्बा, राजराजेश्वरी भगवती

श्रीत्रिपुरसुन्दरी के भक्तिभाव से भरे एवं दिव्य रहस्यों से युक्त हैं। इसमें 74 पद्य हैं तथा यह श्रीमदमृतग्रन्थमाला भरतपुर से प्रकाशित है। इस स्तोत्र का अन्य नाम 'भगवतीस्तव' भी है।

स्तोत्र के प्रारम्भ में जन्म जन्मान्तरों के आवागमन से व्याकुल मानव को भोग और मोक्ष दोनों की ही प्राप्ति हो इस आशय की प्रार्थना की गई है—

भ्रामं भ्रामं विविधजननीगर्भगेहान्तरेषु,
श्रान्तश्श्रान्तस्तवपदयुगं प्राप्य विश्रान्तिहेतोः।
शान्तस्स्वान्तश्चरणपतितः प्रार्थये त्वां नितान्तं,
मातर्माऽतः! परमनुभवं जन्मनो देहि मह्यम् ॥[27]

भगवती का ध्यान वर्णन करते हुये लिखा है—

स्फूर्जद्राकाहिमकरमुखी कुन्ददन्ताभिरामा,
लाक्षा पङ्कारुणिमचरणा पक्वबिम्बाधरा माम् ।
बालं बाला स्फटिकगुलिकामालिका पुस्तिकाढ्या,
त्रासत्राणाऽभिलसितकरा सन्ततं पात्वपायात् ॥[28]

भक्त ने बालसुलभ वृत्ति से माता को अनेक उपालम्भ दिये है। अतिशय भक्तिपूर्ण, श्रद्धासमन्वित प्रार्थनाएँ इस स्तोत्र में विहित हैं। बालाम्बा का मन्त्रस्वरूप, सिद्धसाधना, सारस्वतबीज, वाग्वादिनीबीज, मध्यमबीज, कामराजबीज, कुण्डलिनीचक्र, सकलकला अधिष्ठान, वाङ्मय अधिष्ठानों की अधिष्ठात्री के स्वरूपों, फलों, सर्वांग पूजन आदि के द्वारा स्तवन किया गया है। सांसारिक समुद्र में डूबे हुये लोगों को तारने वाली भगवती ही है—

संसाराब्धौ कलुषमसृणे मज्जतां त्वं नराणां
पोतः कोऽपि स्फुरसि इति यच्छयते भक्तवर्गे।
तच्चेत् सत्यं जननि! गणनातीत कारुण्यमूर्ते!
निर्वेदं मे हर हरमुखादुद्गते! त्वत्सुतस्य॥[29]

9. श्रीमहानुभवशक्तिस्तव

इसके लेखक श्रीमदाचार्यअमृतवाग्भव हैं। यह श्रीस्वाध्यायसदन से प्रकाशित है। इस स्तोत्र में सच्चिदानन्दकन्द परिपूर्णप्रकाशरूप परमेश्वर-शिव की विमर्शरूपा शक्ति की वैश्विक महिमा को प्रकट किया गया है। शिवतत्त्व से लेकर पृथ्वीतत्त्व तक समस्त ब्रह्माण्ड को व्याप्त करने वाली भगवती अनेक दशाओं में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होती है, जिनका साक्षात्कार योगियों को समाधि द्वारा होता है। भगवती के पाँच

प्रमुख रूप है- चित्शक्ति, निर्वृत्तिशक्ति, इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति । इन्हीं पाँच शक्तियों का विशेष स्तवन इस स्तोत्र में किया गया है। जिस प्रकार बीज से वृक्ष का निर्गम होता है उसी प्रकार परमेश्वर से विश्व का निर्गम होता है, यह निर्गम ही विसर्ग है। यह विसर्ग करने वाली परमेश्वर की नैसर्गिकी शक्ति या स्वभावभूता परमेश्वरता चित् शक्ति है। श्रीचक्र के मध्य शिवशक्तिमय परमशिव स्वरूप बिन्दु की शिवता का बीज यही चित् शक्ति है—

प्राक् सर्गतोऽपि परतोऽपि मध्यदेशे
सांसर्गिकेऽत्र सकले परिपूर्णरूपा।
नैसर्गिकी परशिवाकृति बिन्दुबीजं
वैसर्गिकी जयति शक्तिरनन्तवीर्या॥[30]

अहं प्रकाश से संसार के समस्त भावों को भरने वाली आनन्दरूपिणी निर्वृति आदि अन्य शक्तियों का भी सारगर्भित रहस्याख्यायी स्तवन किया गया है।

10. देवीस्तोत्र

इस स्तोत्र के प्रणेता आचार्य अमृतवाग्भव है। यह सहज सरल सुबोध भक्तिभावों से संपूरित आत्मदीनता और अनन्यशरणागति कृपायाचना से युक्त स्तोत्र है। यह स्तोत्र श्रीमदमृतवाग्भावाचार्य-सांस्कृतिकशिक्षा एवं शोधसंस्थान जयपुर द्वारा प्रकाशित *''आचार्य अमृतवाग्भव दर्शनं''* नामक ग्रन्थ में संगृहीत है। हे माँ! मैं आपका पुत्र हूँ अतः मुझ पर कृपापूर्ण दृष्टिपात कीजियें, क्या मेरी दुर्दशा नहीं देख रही है, प्रतीक्षा न कीजिये शीघ्र कृपा कीजिये, मुझ रोते हुये की बात सुनो, बताओ किसके समक्ष रोऊँ? आपके अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं है। आपके चरणकमलों में शत शत प्रणाम करके याचना करता हूँ, मेरी रक्षा कीजिये। भावों से भरे कुछ पद्य देखिये—

हर मे हर वामलोचने
सकलां त्वं मलपङ्कसंहतिम् ।
भवभूरिभयापहारिणी
भवसिन्धौ भवभीतिचेतसाम् ॥
मम मातरिदं शृणुष्व मे
वचनं नेत्रजलेन मिश्रितम् ।
वद रोदिमि कस्य संमुखं
त्वदृतेऽन्यस्थलमेव नास्ति मे॥
तव संप्रति पादपङ्कजे
शतशोऽयं प्रणिपत्य याचते।

तनयस्त्वं सर्वथास्म्यहं
दयया मां परिपालयाम्बिके॥[31]

11. श्रीमातृलहरी

मातृलहरी के रचयिता रामपुरा, जयपुरनिवासी श्री नाथूलाल शर्मा 'मधुकर शास्त्री' हैं। यह स्तोत्र श्रीबाला माता त्रिपुरसुन्दरी की आराधना में लिखा गया है। श्री शास्त्री जी बांसवाड़ा के निकट स्थान में विराजित अष्टादशभुजधारिणी पराम्बा के अनन्य उपासक हैं। इस स्तोत्र में 50 पद्य हैं तथा यह रचना प्रकाशित है।[32] यह स्तोत्र प्रो. प्रभाकर शास्त्री द्वारा सम्पादित तथा राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा प्रकाशित *''राजस्थान लहरीलीलायितम्''* नामक ग्रन्थ में भी संकलित है। कतिपय पद्य प्रस्तुत है—

त्रैलोक्यस्फुटमन्त्रतन्त्रमहिमां नाप्नोति शश्वद् विना,
यद्बीजं व्यवहारजालमखिलं नास्त्येव मातस्तवत्तः।
तज्जाप्यस्मरणप्रसक्तसुमतिः सर्वज्ञतां प्राप्य कः
शब्दब्रह्मनिवासभूतवदनो नेन्द्रादिभिः स्पर्धते॥
बिन्दुप्राणविसर्गजीवसहितं बिन्दुत्रिबीजात्मकं,
षट्कूटानि विपर्ययेण निगदेत्तारत्रिबालावलैः।
एभिः सम्पुटितं प्रज्य्य विहरेत् प्रासादमन्त्रं परं
गुह्याद् गुह्यतमं सयोगजनितं सद्भोगमोक्षप्रदम् ॥[33]

12. श्रीमहिम्नस्तोत्र

इस स्तोत्र के प्रणेता अलवर निवासी पं. प्रभुदत्त शास्त्री है। जगज्जननी की आराधना में रचित इस स्तोत्र में 41 पद्य हैं। लेखक द्वारा स्वरचित टीका सहित यह ग्रन्थ प्रकाशित है।

13. श्री चण्डिका स्तुति

इस स्तोत्र के प्रणेता डूंडलोद सीकर के निवासी पं. महावीर प्रसाद जोशी हैं। यह स्तव उनके स्तुतिसंग्रह *'प्रार्थना पुष्पाञ्जलि'* में संगृहीत हैं जिसका प्रकाशन कलानिकेतन शार्दुलपुर ने किया है। कतिपय पद्य प्रस्तुत है जो अनुपम नाद सौन्दर्य से मनोहारी बन गये हैं—

अमन्दनन्दनारविन्दकुन्दमालनन्दिता।
मुकुन्दचन्द्रमौलिमद्गजेन्द्रवृन्दवन्दिता॥
अनिन्द्यसुन्दरीश्रिया सुमन्द्रमन्दहासिनी।
परं दरं दुनोतु मे पुरन्दरारिनाशिनी॥

अशान्तकान्तकुन्तला दुरन्तकुन्तधारिणी।
दिगन्तदन्तिदन्तकृन्तनोग्रसिंहचारिणी॥[34]

14. भगवती स्तव

इस स्तोत्र के रचयिता कांकरोली उदयपुर निवासी पं. लक्ष्मीनारायण पुरोहित है। इस स्तोत्र जगदम्बा के महिमामय उज्वल चरित्र का गान किया गया है। यह स्तोत्र कालिदासस्मृतिसमारोह कविसम्मेलन में 'कालिदासः-भागधेयम्' इन दो समस्यापूर्तियों के रूप में श्री पुरोहित द्वारा सुनाया गया। यह राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'राजस्थान के कवि' में संकलित तथा प्रकाशित है। कतिपय पद्य प्रस्तुत है—

लोकस्य भीतिहरणं शरणं सुराणां
मातस्त्वदीयचरणं प्रणतोऽनुरागैः।
लोकोत्तरामचिरमुन्नतिमाप्नुवानो
लोकाश्रयो भवति बत कालि! दासः॥
मातस्तवैष वरदः करकल्पशाखी
छायाकरोति करुणाचलितः कदाचित्।
यन्मूर्ध्न्यसावखिलतापविनिर्गतः सन्
कामन् समान् समयते तव कालिदासः॥
मन्दावलोकमधुरा वसुधा सुधाऽसौ
नेत्रेषु याऽम्ब! रुचिरा रुचिरा विभाति।
स्नेहाम्बुधेः स लसतोऽन्तरुदेति भङ्गोऽ
नेनेष्यते स्नपयितुं तव कालि! दासः॥[35]

15. श्री कात्यायनी स्तुति

इस स्तुति के रचयिता डूंगरपुर निवासी पं. गणेशराम शर्मा है। *भारती पत्रिका* में प्रकाशित इस स्तव में जगदम्बा दुर्गा की अवतारस्वरूपा देवी कात्यायनी की वन्दना है। 25 पद्यात्मक इस स्तोत्र में भक्तिभाव और कवित्व का रुचिकर सामञ्जस्य है। सम्पूर्ण स्तोत्र प्रहर्षिणी छन्द में निबद्ध है। सर्ववन्द्या देवी की स्तुति के दो पद्य देखिये—

या देवी सुरनरसिद्धसन्मुनीन्द्रै-
र्गन्धर्वैर्गुहगणकिन्नराप्सरोभिः।
देवर्षिद्विजपतिभूमिपालसङ्घै-

वन्द्या तामिह जगदम्बिकां प्रपद्ये॥
चिद्रूपागमनिगमेषु कीर्तितापि
अव्यक्तापि त्रिगुणयुतापि विश्वयोनिः।
अव्यक्तां तदपि जगु विरञ्चिमुख्यां-
स्तां दुर्गादुरधिगमां शिवां प्रपद्ये॥[36]

16. श्री देवीमहिमाष्टकम्

इसके प्रणेता निम्बार्क पीठाधीश्वर जगदगुरु श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य हैं। यह रचना *'स्तवरत्नाञ्जलि'* में संकलित प्रकाशित है। परात्परब्रह्म की परा आद्यशक्ति, अचिन्त्य रूपा, रमणीयशोभायुक्त, सिद्धेश्वरी, सिद्धिमती, देवताओं की स्वामिनी, वरेण्य (श्रेष्ठ) श्री वैष्णवी देवी को नमस्कार है जो दुराचारी दुर्दम दैत्यों का संहार करने वाली, भव भयहारिणी है। जो श्रीकृष्ण की शक्ति, दिव्यकान्तिवाली, कात्यायनी, हैमवती, भवानी, भक्तिप्रदायिनी, शरणागतपीडाहारिणी सर्वश्रेष्ठा है ऐसी सर्ववन्द्या वैष्णवी को बारम्बार प्रणाम अर्पित करने वाले इस सुमधुर स्तोत्र के कतिपय पद्य प्रस्तुत है—

परात्परब्रह्मपराद्यशक्ति-
मचिन्त्यरूपां रमणीयशोभाम्।
सिद्धेश्वरीं सिद्धिमतीं सुरेशां
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम्॥
संहारशक्तिरसपूर्णभक्ति-
मानन्दशक्तिं रसलिप्सुतृप्तिम्।
रसानुरक्तिं वरणीयवृत्तिं
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम्॥[37]

17. ललितालहरी

इसके लेखक जोधपुर निवासी पं. श्री राम दवे है। 62 शिखरिणी पद्य-निबद्ध यह रचना आदरणीय दवे जी ने प्रकाशित कर वितरित की है। कवि ने अपने जीवन के प्रत्येक कठिन अवसर पर प्राप्त सफलता का कारण भगवती ललिता की अनुकम्पा को माना तथा अपने व्यवस्थित जीवन के सांयकाल में माता के गुणगान स्वरूपिणी *'ललिता लहरी'* की रचना की। जोधपुर के निकट समदड़ी नामक स्थान पर शैलवासिनी माँ ललिता का विग्रह है जो श्री दवे की कुलदेवी तथा आराध्या है। इसक स्तोत्र में अनन्य भक्ति और पाण्डित्य का मनोरम सम्मिलन है। दो पद्य प्रस्तुत है—

तव द्वारोपेतो व्रजति न निराशः क्वचिदपि
धनी वा दीनो वा ध्रुवमभिमतं विन्दति जनः।
अभीष्टानां दात्रीं सकलजनधात्रीञ्च ललिते
विहायान्यां कां वा शरणमधिगच्छामि जननीम् ॥
शरीरे वैक्लव्यं विषमरुजया माऽस्तु ललिते!
सपर्यावैधुर्यं भवति खलु येनाम्ब! सहसा।
कृपापाङ्गा दृष्टिर्मयि लसतु नित्यं भगवति!
न मे भक्तिस्थैर्यं विचलतु च मातः क्वचिदपि॥[38]

18. श्रीस्तवस्तबकम् (अष्टकाष्टकम्)

इसके प्रणेता भरतपुरवासतव्य कविपुण्डरीक पं. सम्पूर्णदत्त मिश्र है। यह श्रीमिश्र के उन स्तोत्रों का संग्रह जिनमें भगवती का स्तवन विहित है। अष्टकाष्टकम् में 8 स्तुतियाँ है—1. कालीधिकाराष्टकम्, 2. गुणवतीस्तव, 3. सौभाग्यभावन्यास्तव, 4. दुःस्वप्नार्तिहरास्तव, 5. धवलाचलदुर्गास्तव, 6. धवलपर्वतसुन्दरीस्तव, 7. कामाक्षावरदस्तव, 8. सुन्दरीसंगमस्तव है।

यह संकलन सम्प्रति पूर्णतः अनुपलध है तथा अप्रकाशित भी। 'कामाक्षावरदस्तोत्र' शोधप्रबन्धकर्ता को उपलब्ध हो सका है। यह स्तोत्र कवि के अनुसार आशुविवाहकारक है जिसके पाठ से कई अविवाहित वर कन्याओं के विवाह हो गये हैं—

वरविवाहकामाय स्त्रीपुँल्लोकाय निर्मितम् ।
सर्वकामहितं नित्यं कामाक्षावरदाष्टकम् ॥

यह सदाशिव की शक्तिस्वरूपणी कामाक्षा देवी के आराधन में रचित है। इसके दो पद्य प्रस्तुत है—

कामाक्षिके वरदगेहिनि योगदक्षे
दुर्भाग्यलेखलघुलुम्पनलम्पटा त्वम् ।
धर्मार्थकामजसुखाय समुत्सुकोऽहं
सौभाग्यभावनपरे शरणं त्वमेव॥
विवाहोत्को लोकः सपदि वरपत्नी सुखमलं
पतीयन्ती नारी पतिसुखमवाप्रोति तरसा।
ततो दुर्भाग्याङ्कप्रकटपरिणामापि जगती
सकामा कामाक्षे वरदरमणि त्वां प्रणमति॥[39]

19. स्रग्धरा स्तव

इसके लेखक राजगढ़ अलवरवासतव्य पं. विष्णुदत्त शास्त्री है। पं. शास्त्री ने अपने गुरु तन्त्रागमनिष्णात आचार्य हैडियाखण्ड बाबा के स्मरण में 700 पद्यों के विशाल स्तुतिसंग्रह का प्रणयन किया है। श्री शास्त्री के गुरु नैनीताल के समीप हैडियाखण्ड नामक शक्ति पीठ पर सिद्ध हुये अतः वे इसी अभिधान से प्रसिद्ध हो गये, कालान्तर में उन्होंने राजस्थान में निवास किया। पं. विष्णुदत्त शास्त्री तन्त्रसाधना में दीक्षित हुये तथा भगवती कृपा से प्रभावशाली कवित्वपूर्ण रचनाओं का स्फुरण होने लगा। स्रग्धरास्तव इसी संग्रह में संकलित तथा प्रकाशित है। इसमें 10 पद्य है। पराम्बा त्रिपुर सुन्दरी की महिमा बताने वाला एक पद्य प्रस्तुत है—

हैडाखण्डेश्वरी त्वं सकलसुरनुते देवि विश्वार्तिहन्त्री
दीनार्तानां सदा त्वं भवभयहरणे! प्रोद्यता मातृशक्तिः।
त्वं गौरी सर्वदेहे पदकरनिकरे शोणरूपा विभासि
भासा श्रीदन्तपङ्क्तेर्नखदृगसुषमा भास्वरा भासि गौरिः॥[40]

20. उपजाति स्तव

उपजातिछन्दोबद्ध अष्टश्लोकात्मक इस रचना के रचयिता अलवर वास्तव्य पं. विष्णुदत्त शास्त्री है। श्री बालात्रिपुरसुन्दरी जगदम्बा का यह स्तवन भी हैडयाखण्डी *सप्तशती* में संगृहीत, प्रकाशित है। दो पद्य प्रस्तुत हैं—

भवार्णवे भीतितरङ्गपूर्णे मोहान्धतामिस्रसमाकुलोऽहम् ।
मां रक्ष अम्बे! जगदावलम्बे, प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि दुर्गे॥
आनन्दरूपां चितिशक्तिदीप्तां, विद्या परां ब्रह्मरसनानुभूतिम् ।
कारुण्यपूर्णां गुरुमूर्तिरूपां, देवीं नमामः जगदीश्वरीं त्वाम् ॥[41]

21. अनुष्टुपस्तव

अनुष्टुपछन्द में निबद्ध इस रचना के प्रणेता भी अलवरवासतव्य पं. विष्णुदत्त शास्त्री है। इस स्तवन में 114 पद्य हैं जिनमें ब्रह्माणी, सर्वपापविमोचिनी, परात्परा, श्री विद्याधिष्ठात्री पराम्बा का स्तवन है। कुछ पद्य प्रस्तुत है—

तापत्रयहरी नास्ति, त्वत्समा भुवनत्रये।
देवि त्र्यम्बकपत्नी त्वं मातस्त्रैलोक्यवन्दिते॥
नमस्त्रैलोक्यसंत्राणतत्परे परमेश्वरि।
सर्वज्ञे सर्वनिलये सर्वसाधनसिद्धदे॥

नमस्ते योगिनी सिद्धवत्सले पालपोषिणी।
नमो विश्वार्तिहारिणी विश्ववन्द्ये नमो नमः॥[42]

22. शार्दूलस्तव

इसके लेखक पं. विष्णुदत्त शास्त्री है। शार्दूलविक्रीडित छन्द में निबद्ध 44 पद्यात्मक यह रचना भी हैडयाखण्डी *समशती* में प्रकाशित है। इसके दो पद्य प्रस्तुत है–

चन्द्रे चन्द्रप्रभात्वमेव जननी सूर्यप्रभा निर्मला,
नक्षत्रेषु चमत्कृतिः सुविमला त्वद्रूपिणी लक्ष्यते।
वह्नौ दाहकता जले सरसता भूमौ जगद्धारिणी,
शक्ति ते प्रतिमा विभाति वरदे! विष्णौ जगत्पालिनी॥
लक्ष्मी त्वं सदया कृपामृतवहा दानीश्वरी दैन्यहा
यातायाचकतां सुरास्तवपुरः संयाच्य भिक्षां सकृत् ।
त्वं नित्यं द्रवसे दयापरवशा दीने दयाकारिणी,
मातर्देवि दयामयि कुरु कृपावृष्टिसुधास्यन्दिनीम् ॥[43]

23. नवदुर्गास्तवनम्

इसके रचयिता जयपुरवास्तव्य पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय है। दुर्गा आदिशक्ति है जिसके अनुग्रह से इस अनुपम सृष्टि की रचना हुई है। भक्तजनमानस कुञ्जविहारिणी, कलिमलहारिणी, त्रिविधतापनिवारिणी एक ही शक्ति के नवस्वरूपों का नवरात्रों में सभी साधकों द्वारा पूजन समर्चन किया जाता है। नवदुर्गाओं की अनुकम्पा से ही साधकगण सिद्धकाम होकर संसार सागर को पार कर जाते हैं। इस स्तोत्र में इन्हीं नवदुर्गाओं— शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कुमाण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धिदात्री की कृपा की अभिलाषा वर्णित है साथ ही भगवती के दिव्य स्वरूपों तथा अलौकिक महिमामय कार्यों का समुल्लेख-स्तवन वन्दन है। सिद्धिदात्रिमाता के मनोहारी स्वरूप का गान करता एक पद्य प्रस्तुत है—

गन्धर्वैः सिद्धसङ्घैरदितिदितिसुतैर्मानवैः सेव्यमाना,
अष्टै सिद्धीः प्रदत्ते धृतकमलगदाशङ्खचक्राभिरामा।
यस्या एव प्रसादान्मदनमदहरोऽप्यर्धनारीश्वरोऽभूत्
पायात् सा सिद्धिदात्री जननभयहरा विश्वकल्याणकर्त्री॥

इसी भांति गोद में कुमार को लिये देवसेनाओं का नेतृत्व करती हुई, हाथ में कमलधारण करने वाली, भक्तों को अपना परमपद प्रदान करने वाली, करोड़ों सूर्यों की प्रकाशवाली कामदेव के नाशक श्री शिव की प्रिया मृगेन्द्रासना स्कन्दमाता से रक्षा की प्रार्थना में रचित पद्य प्रस्तुत है—

यस्या अङ्के कुमारो विलसति नितरां देवसेनाग्रगायी
हस्ताब्जैः पद्मयुग्मं वरमथ तनयं या हि धत्ते सिताङी।
भक्तेभ्यो या प्रदो निज परमपदं कोटिसूर्यप्रकाशा
पायान्नः स्कन्दमाता स्मरहररमणी सा मृगेन्द्राधिरूढा॥[44]

24. शक्तिमङ्गलम्

इसके प्रणेता जयपुरवास्तव्य पं. श्री प्यारेमोहन शर्मा है। यह स्तुति आपने 'भारती' के सम्पादन में मंगलपद्यों के रूप में विरचित की। इस स्तोत्र में भक्तिभावप्रवण कवि नवकोटिशक्तियुता जगदम्बिका से रक्षा की अभ्यर्थना करता है। शक्ति के मंगल स्वरूप का गान करने वाले दो पद्य प्रस्तुत है—

विद्या : सन्ति पुराणशास्त्रगदिता यस्या विभेदा शुभाः
सर्वा या वनिता नरा क्षितितले तस्याः स्वरूपाश्च ताः।
सर्वा चापि चराचरं जगदिदं यत्तेजसाभासते
अम्बा सा नवकोटिशक्तिसहिता मां पातु विन्ध्येश्वरी॥
चन्द्रार्काग्निविलोचना शशिधरा भक्तैर्सदा वन्दिता,
कान्त्या विश्वमोहिनी स्मितमुखी भूदेवरक्षापरा।
म्लेच्छेभ्यो भुवि भारतं प्रतिपलं संरक्षितुं तत्परा,
प्रीता सा जगदम्बिका स्वतनयान् पायादपयादहो॥[45]

25. श्रीललितामङ्गलसङ्गीतम्

इस स्तोत्र के प्रणेता भरतपुरनिवासी कविपुण्डरीक पं. सम्पूर्णदत्त मिश्र है। यह प्रकीर्ण स्तुति रचना है जो किसी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। शोधहेतु श्री मिश्रजी द्वारा इसकी छाया प्रति उपलध कराई गई। गणपति, बटुकभैरवादि संवलित श्री त्रिपुरसुन्दरी जगदम्बा ललिता के चरणारविन्दों का वन्दन करने वाले इस स्तव का एक पद्य प्रस्तुत है—

इन्द्राणीन्द्रमुकुटमणिदीपितकल्पलताकुसुमाञ्जलिशलिते।
रतिपतिहासविलासविकासितकवितागीतकलाञ्जलफलिते॥
गणपतिबटुकभैरवीवलिते वन्दे पदकमले ते ललिते॥

26. ललितात्रिशती काव्यम्

इस स्तोत्र के रचयिता लक्ष्मणगढ सीकर निवासी पं. मुरारिलाल गोस्वामी हैं। इस रचना में 300 पद्य हैं जिनमें पराम्बा भगवती के तीन सौ नामों की आगमशास्त्रीय व्याख्या की गई है। आगम साहित्य में आद्या शक्ति ललिता के सहस्रों नाम वर्णित हैं फिर भी इस स्तोत्र में व्याख्यायित ककाररूपा आदि तीन सौ विरुद

शाक्त साधना के क्षेत्र में विशेष महत्व रखते हैं। ये नाम रहस्यमय हैं तथा सर्वप्रथम स्वयं सदाशिव के आदेश से ही भगवान् हयग्रीव ने महामुनि अगस्त्य को अधिकारी जान कर स्तवरूपात्मक ये नाम बताये थे। कवि ने प्रत्येक नाम पर एक-एक पद्य की रचना कर एक सुन्दर शक्तिस्तोत्रकाव्य का प्रणयन किया है। एक पद्य प्रस्तुत है—

शिरः कराक्षावयवाकला वा
विद्या चतुषष्टिकलाधरां वा।
ध्यानाय चन्द्रस्य कलां दधाना
कलावतीं त्वां मनसा स्मरामि॥

27. शिवा शतक

इसके लेखक लक्ष्मणगढ़ सीकर वास्तव्य पं. विश्वनाथ जोशी हैं। सौ पद्यों में रचित इस काव्य में जगजननी आद्याशक्ति पराम्बा शिवा की महिमा का गुणानुवाद किया गया है। सगुण ब्रह्म माया से सृष्टि की रचना करता है। ब्रह्म की यह माया शक्ति ही दुर्गा, भवानी, चण्डी, शिवा आदि नामों से शक्ति उपासना के क्षेत्र में विख्यात है । जिस प्रकार सृष्टि के उत्पत्ति, रक्षण तथा लयार्थ परब्रह्म के ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन प्रधान रूप हैं उसी प्रकार अनेक रूप युक्ता शक्ति के भी तीन प्रधान रूप हैं—

त्वमेव ब्रह्माणी परमशुभगा हंसरथगा
त्वमेव श्रीरूपा कृतगरुडयाना शशिमुखी।
वृषारूढा गौरी त्वमसि शिववामाङ्कनिलया
स्मरामि त्वां नित्यं सकलजगतामेकजननीम् ॥[46]

इनके अतिरिक्त भी अनेक सुललित स्तुति मुक्तकों वाले अनेक स्तोत्र लिखे गये हैं जिनमें भगवती राजराजेश्वरी श्रीचक्राधिष्ठात्री महासौन्दर्यसारश्रिया जगदम्बिका त्रिपुरसुन्दरी का भावमय स्तवन-वंदन-अभिनंदन किया गया है।

संदर्भ

1. *संस्कृत रत्नाकर*, वर्ष 4 अंक 11
2. *संस्कृत रत्नाकर*, 8 अंक 5 दिसम्बर 1941 पृ. 149
3. *दुर्गापुष्पाञ्जलि*, राज पुरातत्वान्वेषण मंदिर जयपुर (सम्प्रति राज. प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान) सन् 1957
4. *दुर्गापुष्पाञ्जलि*, पृ. 3, 5 पद्य 2, 3, 5
5. *दुर्गा पुष्पाञ्जलि जगदम्बा जयवाद*, पृ. 6,9,12 पद्य 1,4,8
6. *इहाष्टक, दुर्गा पुष्पाञ्जलि*-पद्य 2,8

7. *देवकालीमहिमा, दुर्गा पुष्पाञ्जलि*-पद्य 1, 7
8. *चण्डिकास्तुति, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 4
9. *महिषमर्दिनी गीति, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 1, 4
10. *सकलजननीस्तव, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 1
11. *सौख्याष्टक, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 7, 8
12. *अम्बा वन्दना* -पद्य 3
13. *आदेशाश्वघाटी, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 6
14. *स्वार्थाशंसनम्, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 5
15. *अन्तर्विमर्श, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 1, 5
16. *आर्याम्बिर्चना, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 1, 8
17. *अवस्थानिवेदन दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 2, 7
18. *आत्मसमर्पण, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 4, 6
19. *दुर्गापुष्पाञ्जलिभूमिका*, गंगाधर द्विवेदी
20. *दुर्गाप्रसादाष्टक, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 1, 3, 5
21. *नवदुर्गास्तव, दुर्गापुष्पाञ्जलि*-पद्य 1, 2
22. *राजस्थान के कवि*, पृ. 26 से उद्धृत
23. *कालिकात्रिंशती*, पद्य- 1, 7, 8, 16
24. *कस्तूरीस्तवराज*, पद्य 1, 29
25. *कस्तूरीस्तवराज*, पद्य 1, 29
26. *कविमल्लकाव्यकौमुदी- देवीस्तोत्र*,पद्य- 2, 4, 11
27. *मन्दाक्रान्ता स्तोत्र*, पद्य 1
28. *मन्दाक्रान्ता स्तोत्र*, पद्य 5
29. *मन्दाक्रान्ता स्तोत्र*, पद्य 7
30 *महानुभवशक्तिस्तव*, पद्य-2
31. *देवीस्तोत्र*, पद्य 5, 7, 8
32. *राजस्थान लहरीलीलायितम्*, पृ. 233
33. *श्री मातृलहरी* पद्य 3, 4
34. *श्री चण्डिका स्तुति, प्रार्थनापुष्पाञ्जलि* पृ. 14
35. *राजस्थान के कवि*, पृ. 72 पद्य 4, 5, 10
36. *राजस्थान के कवि*, पृ. 19

37. *स्तवरत्नांजलि*, पृ. 100
38. *ललित लहरी*, पृ. 56, 58
39. *कामाक्षावरदस्तव* की छायाप्रति श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र द्वारा शोधलेखक को प्रदान की गई।
40. *हैडाखण्डी सप्तशती*, पद्य-14
41. *उपजातिस्तव*, पद्य 1, 7
42. *अनुष्टुपस्तव*, पद्य 13, 27, 90
43. *शार्दूलस्तव*, पद्य 19, 40
44. *स्वरमंगला*, अक्टू0-दिस0 99 (24/4) पृ. 1
45. *भारती* अक्टूबर 98 पृ. 1
46. *शिवाशतक*, साहित्य परिषद्, लक्ष्मणगढ़ सीकर

संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राजस्थान)
चलवाणी-09414292699

श्री हरिहरानन्द सरस्वती करपात्र स्वामी द्वारा निरूपित त्रिपुरसुन्दरी शक्ति का स्वरूप

डॉ. गीतांजली शुक्ला

श्री हरिहरानन्द सरस्वती करपात्र स्वामी जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ *भक्तिसुधा* में त्रिपुरसुन्दरी भगवती के स्वरूप का विश्लेषण इस प्रकार किया है। अनन्त कोटि ब्रह्माण्डात्मक प्रपञ्च की अधिष्ठानभूता सच्चिदानन्द स्वरूपा भगवती ही सम्पूर्ण विश्व को सत्ता, स्फूर्ति एवं सरसता प्रदान करती हैं। विश्वप्रपञ्च उन्हीं से उत्पन्न होता है, और अन्त में उन्हीं में लीन हो जाता है। जैसे दर्पण में आकाशमण्डल, भूधर, सागरादि प्रपञ्च प्रतीत होता है, दर्पण को स्पर्श कर देखा जाए तो यहाँ वास्तव में कुछ भी उपलब्ध नहीं होता। वैसे ही सच्चिदानन्द रूप महाचिति भगवती में सम्पूर्ण विश्व भासित होता है। जैसे दर्पण के बिना प्रतिबिम्ब का भान नहीं होता है दर्पण के उपालम्भ में प्रतिबिम्ब का उपालम्भ होता है, वैसे ही अखण्ड नित्य, निर्विकार महाचिति में ही उसके अस्तित्व में ही प्रमाता, प्रमेय, प्रमाणादि विश्व उपलब्ध होता है। अधिष्ठान न होने पर भाष्य के उपालम्भ की आशा नहीं की जा सकती।

सामान्य रूप से तो यह बात सर्वमान्य है कि प्रमाणाधीन ही किसी भी प्रमेय की स्थिति होती है। अतः सम्पूर्ण प्रमेय में प्रमाण कवलित ही उपलब्ध होता है। प्रमाता, प्रमेय और प्रमाण ये अन्योन्य परस्पर की अपेक्षा रखते हैं। प्रमाण का विषय होने से ही कोई वस्तु प्रमेय हो सकती है। प्रमेय को विषय करने वाला अन्तःकरण की वृत्ति ही प्रमाण कहला सकती है। प्रमेय विषयक प्रमाण का आश्रय अन्तःकरणावच्छिन्न चैतन्य ही प्रमाता कहलाता है। फिर भी इन सब की उत्पत्ति, स्थिति और गति का भासक नित्यबोध आत्मा ही है और वही 'साक्षी' और 'ब्रह्म' भी कहलाता है। यद्यपि शुद्ध ब्रह्म स्त्री, पुमान् या नपुंसकों में से कुछ नहीं है तथापि वह चिति भगवती आदि स्त्री वाचक शब्दों से और ब्रह्म, ज्ञान आदि नपुंसक शब्दों से भी व्यवहृत होता है। वस्तुतः स्त्री, पुमान्, नपुंसक- इन सबसे पृथक् होने पर भी उस-उस शरीर के सम्बन्ध से या उस के सम्बन्ध से वही अचिन्त्य अव्यक्त, स्वप्रकाश, सच्चिदानन्दस्वरूपा महाचिति भगवती आत्मा, पुरूष, ब्रह्म आदि शब्दों से व्यवहृत होती है। मायाशक्ति का आश्रयण करके वे ही त्रिपुरसुन्दरी भुवनेश्वरी, विष्णु, शिव, कृष्ण, राम, गणपति, सूर्य आदि रूपों में व्यक्त होती है। स्थूल, सूक्ष्म, कारण रूप त्रिपुर (तीन देह) के भीतर रहने वाली सर्वसाक्षिणी चिति ही त्रिपुरसुन्दरी कहलाती है। उसी माया विशिष्ट तत्त्व के जैसे रामकृष्णादि अन्यान्य अवतार होते हैं, वैसे ही महालक्ष्मी, महागौरी, महासरस्वती आदि अवतार होते हैं। यद्यपि